Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल संस्कृति व ग्लोबल साहित्य

प्रो. बबीता काजल आचार्य, हिन्दी विभाग, चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

संस्कृति व साहित्य परस्पर अन्तः सम्बन्धित हैं। ग्लोबल से तात्पर्य है वैश्विक अथवा विश्वव्यापी। 21वीं शताब्दी में बढ़ते औद्योगीकरण,बाजारवाद, उदारवाद, तकनीकी विकास व निजीकरण ने सम्पूर्ण विश्व को एक मंच पर खड़ा किया है। जिसके परिणामस्वरूप ग्लोबल संस्कृति का विकास हुआ है। ग्लोबल संस्कृति के एक महत्वपूर्ण उपादान के रूप में ग्लोबल साहित्य विभिन्न भाषाओं में लिखा ऐसा साहित्य है जो लोकप्रिय हुआ और आनुवादित होने के बाद विभिन्न देशों के पाठक तक पहुंचा। वैश्विक मंच ने संस्कृति के साथ साहित्य को ग्लोबल रूप प्रदान किया है। मुक्त व उदार अर्थव्यवस्था के साथ नई संस्कृतियों का देश में प्रवेश होता है और बाजारवाद व उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा मिलता है। ऐसे में ग्लोबल संस्कृति व ग्लोबल साहित्य क्रमशः स्थानीय संस्कृति और भाषा के लिए चुनौती प्रस्तुत करता है। ग्लोबल और स्थानीयता का उचित अनुपात ही विश्व को भी जोड़ेगा और स्थानीयता (संस्कृति, भाषा, परम्परा, भोजन, संगीत, वास्तुकला आदि) की भी रक्षा करेगा।

KEYWORDS:

ग्लोबल संस्कृति, ग्लोबल साहित्य, औद्योगीकरण, बाजारवाद, तकनीकी विकास, अनुवाद, उदार अर्थव्यवस्था, प्राकृतिक संसाधन, सांस्कृतिक क्षरण, समरूपीकरण ।

प्रस्तावना

21वीं शताब्दी के साथ विश्व साहित्य संस्कृति की चर्चा करते हुए ग्लोबल शब्द सर्वाधिक प्रयुक्त हुआ है। ' ग्लोबल ' का अर्थ ' ग्लोब ' से जुड़ा है जिसका तात्पर्य है गोलाकार, गेंदनुमा आकृति या वस्तु जो विशिष्ट रूप से भूगोल के संदर्भ में प्रयुक्त होने पर पृथ्वी का एक त्रिआयामी मॉडल होता है। जिस पर महाद्वीप, देश, महासागर और अन्य भौगोलिक स्थितियों को दिखाया जाता है। अक्षांश व देशांतर को दर्शाने वाली रेखाएं होती है।[1] जिसका उपयोग मूलतः पृथ्वी के अवलोकन हेतु किया जाता है। इस प्रकार ' ग्लोबल ' से तात्पर्य है पूरी दुनिया से जुड़ा हुआ अर्थात् जो व्यापक, वैश्विक, विश्वव्यापी, गोलाकार, भूमंडलीय, सार्वभौमिक सार्वत्रिक है- वह ' ग्लोबल ' है। संस्कृति व साहित्य के मध्य परस्पर अटूट संबंध है। जब बात 'ग्लोबल संस्कृति ' व ' ग्लोबल साहित्य ' की होती है तो ग्लोबल शब्द विशिष्ट अर्थ का बोध करवाता है। संस्कृति और साहित्य का ग्लोबल होना संस्कृतियों व साहित्य को देश, काल की सीमा के विरूद्ध विस्तृत करना है। साहित्य संस्कृति का संवहन है । तेजी से बदलती ग्लोबल संस्कृति का प्रभाव जहां ग्लोबल साहित्य पर पड़ा है वहीं ग्लोबल साहित्य ग्लोबल संस्कृति में परिवर्तन का कारक भी है। जहां ग्लोबल संस्कृति से तात्पर्य विशेष रूप से पश्चिमी सभ्यता व यूरोप की संस्कृति से लिया जाता था।[2] वहीं अब वैश्विक संस्कृति का अन्य देशों मे विस्तार हुआ है। ग्लोबल संस्कृति सांस्कृतिक क्षरण की भी वजह बन जाती है। सांस्कृतिक क्षरण के कारण अल्पसंख्यक भाषा बोलने वाले लोगों की संख्या में कमी आ सकती है तथा भाषा खतरे में पड़ सकती है।

जब कोई देश मुक्त उद्यम व्यवसायों को स्थापित करने की अनुमति देता है तो वह नई संस्कृतियों के प्रवेश को अनुमति देता है। भारत में मुक्त व उदारवादी अर्थव्यवस्था के पश्चात् बहुत से परोक्ष व प्रत्यक्ष परिवर्तन हुए है। क्यूबा में पर्यटन व नेटफिलक्स जैसे वैश्विक मीडिया के विकास के साथ वैश्विक संस्कृति ने स्थानीय संस्कृति (क्यूबा की) को चुनौती दी है। भाषा, परम्परा, भोजन, संगीत, वास्तुकला कुछ ऐसे मुख्य आयाम है जिनमें सीधा परिवर्तन दिखाई देता है।

वैश्विक संस्कृति यूरोप और उत्तरी अमेरिका से आती है जो धन, सृजन उपभोक्ता वस्तुओं पर खर्च करने के लिए धन कमाने और भौतिक संपदा पर निर्भर होने की सफलता पर केन्द्रित है और धन कमाने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जाता है। सांस्कृतिक के क्षरण, सांस्कृतिक प्रसार और सांस्कृतिक समरूपीकरण, वैश्विक संस्कृति के नकारात्मक प्रभाव के उदाहरण है ।

ग्लोबल साहित्य -

ग्लोबल साहित्य को विश्व साहित्य भी कहा जाता है। कोई एक चीज जो किसी एक भाषा के साहित्य को वैश्विक या ग्लोबल बनाती है वह है अनुवाद। डॉ. ऋषभदेव शर्मा तो अपने शोध पत्र का प्रारंभ ही इस वाक्य से करते हैं- "विश्व साहित्य की संरचना अनुवाद के बिना संभव नहीं है।"[3] आगे वो यह भी कहते हैं कि- "विश्व साहित्य की कल्पना को साकार करने में अनुवाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरण है, यदि यह कहा जाए कि अनुवाद भिन्न भिन्न संस्कृतियों के लोगों के मन में आपसी समझ और प्रशंसा के भाव उत्पन्न करने के लिए सबसे जरूरी उपकरण है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।"[4] अनुवाद का कार्य भाषा की निकटता के साथ संस्कृतियों में निकटता का कारक भी बनता है। लक्ष्य भाषा के माध्यम से पाठक विदेशी परिवेश के निकट भी जाता है और भाषिक संस्कृति से भी भिज्ञ होता है। अनुवाद के माध्यम से दूसरे की संस्कृति परिवेश, भाषा आदि से परिचय ही नहीं होता स्वयं की संस्कृति के प्रति बेहतर समझ का विकास भी होता है। अनुवाद से ही साहित्य 'ग्लोबल साहित्य' होता है और जब साहित्य ग्लोबल होता है तो संस्कृति भी अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर ग्लोबल होने की ओर बढ़ती है।

1947 में जब भारत स्वाधीन हुआ तो परिवर्तन की बयार बही। उस परिवर्तन का ही रूप था कि हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में प्रचूर अनुवाद कार्य हुआ। भारतेन्दु हरीश्चन्द्र ने शेक्सपीयर के नाटक 'मर्चेन्ट ऑफ वेनिस' का अनुवाद किया। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने पत्रिका 'सरस्वती' में विभिन्न विषयों के अनुवाद छापे। प्रेमचंद ने भी टॉलस्टाय की रचनाओं को हिन्दी में अनुदित किया। उसके बाद के काल में भीष्म साहनी, नामवर सिंह, हरिवंशराय बच्चन, रामधारी सिंह दिनकर, रघुवीर सहाय, रांगेय राघव, निर्मल वर्मा, कुंवर नारायण जैसे अनेक नामचीन साहित्यकारों ने विदेशी रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद कर विदेशी भाषा, संस्कार, संस्कृति से परिचय करवाया। इसी प्रकार भारतीय रचनाओं, पौराणिक ग्रंथों को विश्व तक पहुंचाने का कार्य अनुवाद ने किया। प्रकाशकों ने भी विश्व साहित्य को हिन्दी में उपलब्ध करवाने का कार्य किया। राजकमल पेंगुइन, राधाकृष्णन प्रकाशन, रूप, मंजुल प्रकाशन, एनबीटी विदेशी लेखकों की प्रसिद्ध पुस्तकें हिन्दी में उपलब्ध करवाता है। इस प्रकार विश्व साहित्य अगाध सागर है। फ्रांस, इंग्लेण्ड, अमरीका, रूस, दक्षिणी अफ्रीका, लेटिन अमेरिका के विश्व साहित्य को आज एक क्लिक पर नेट पर जाना जा सकता है, हिन्दी में पढ़ा जा सकता है।

सम्पूर्ण मानव सभ्यता और उसके सांस्कृतिक पक्ष के संचरण का कार्य ग्लोबल साहित्य करता है। संस्कृति का सहमिलन साहित्य पर सवार है। आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, औद्योगीकरण, जातीय विविधता और बहु सांस्कृतिकता का निर्माण करके साहित्य ग्लोबल हो रहा है। 1997 में बुकर पुरस्कार जीतने वाला "द गॉड आफ स्माल थिंग्स" या 2018 में पुरस्कार प्राप्त 'रेत समाधि' ने भाषा, संस्कृति, देश, क्षेत्र की सीमाओं को लांघा है। दाराशिकोह ने मध्यकाल में उपनिषदों व गीता का फारसी भाषा में अनुवाद किया। अरबी का साहित्य अनुदित हुआ और यूरोप तक पहुंचा। भारत की 'पंचतंत्र' व 'कथा सरित्सागर' का

अनुवाद अनेक भाषाओं में हुआ। 'रामचरितमानस' व 'भगवत गीता', 'महाभारत' आज अनेक भाषाओं में अनूदित होकर भारत से इतर देशों की यात्रा पर है। वर्तमान दुनिया में साहित्य सरहदों को पार करता जा रहा है और साथ ही संस्कृतियां भी संचरण करती है।

ग्लोबल होने के नकारात्मक प्रभाव भी हैं सांस्कृतिक क्षरण, सांस्कृतिक प्रसार और सांस्कृतिक समरूपीकरण, वैविध्य की पहचान समाप्ति उनमें से कुछ है। जब संस्कृति ग्लोबल होती है तो सांस्कृतिक क्षरण की वजह बन जाती है। सांस्कृतिक क्षरण के कारण अल्पसंख्यक भाषा बोलने वाले लोगों की संख्या कम होती जाती है, भाषा खतरे में पड़ जाती है। यही कारण है बहुत सी भाषाएं लुप्त भी हो चुकी हैं। भाषा, साहित्य व संस्कृति कैसे एक दूसरे से जुड़ी हैं यह इन पंक्तियों से स्पष्ट होता है- "एक बात पक्की हैः भाषाओं का विलुप्त होना खतरनाक गति से आगे बढ़ रहा है। पहले से लुप्त हो चुकी भाषाओं (जैसे लेटिन) के अलावा पहले से ही कम लोगों द्वारा बोली जाने वाली इतनी सारी अन्य भाषाएं हैं कि वे निकट भविष्य में अस्तित्व में नहीं रहेगी, जिससे एक गंभीर स्थिति पैदा होती है। भाषाओं की महान विविधता, सांस्कृतिक जैव विविधता सुनिश्चित करती है और एक संस्कृति की पहचान को महत्वपूर्ण रूप से आकार देती है लेकिन जब केवल अल्पसंख्यकों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं को समय के साथ पीछे धकेला जाता है तो उनकी संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा उनके साथ गायब हो जाता है।"[5]

बाजारवाद व उपभोक्ता संस्कृति ने जीवन मूल्यों में भी परिवर्तन किया है। ग्लोबल साहित्य व ग्लोबल संस्कृति क्रमशः स्थानीय भाषा और स्थानीय संस्कृति के लिए चुनौती प्रस्तुत करता है। ग्लोबल होने के प्रक्रिया मानव सभ्यता के विकास का आयाम है इस प्रक्रिया को रोका जाना संभव नहीं है। विश्व मंच जितना छोटा होगा अल्पता (भाषा, संस्कृति,संगीत कला) उतनी समाप्त होती जाएगी। सामूहिकता के साथ नई संस्कृति अस्तित्व मे आती जाएगी। बेहतर होगा कि ग्लोबल प्रक्रिया के समानान्तर स्थानीयता (संस्कृति, भाषा, परम्परा, भोजन, संगीत, वास्तुकला आदि) की रक्षा पर केन्द्रित हुआ जाए। इस हेतु सरकारें बहुत सी योजनाएं चला रही हैं। ग्लोबल व स्थानीयता के अनुपात को उचित बनाए रखने के लिए शिक्षा, जागरूकता, कर्मठता व सम्मिलित प्रयासों की आवश्यकता सदा बनी रहेगी।

REFERENCES

1. https://hr.wikipedia.org
2. https://www.vaia.com
3. डॉ. ऋषभ देव शर्मा, विश्व साहित्य एवं अनुवादः हिन्दी का संदर्भ विश्वम्भरा: अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी भाषा लेखक संघ- ऋषभ उवाच, blogpost.com
4. डॉ. ऋषभ देव शर्मा, विश्व साहित्य एवं अनुवादः हिन्दी का संदर्भ विश्वम्भरा: अन्तर्राष्ट्रीय प्रवासी भाषा लेखक संघ- ऋषभ उवाच, blogpost.com
5. https://itranslate.com अंतिम शब्द: दुनिया की मरती व लुप्त होती भाषाएं